This question paper contains 3 printed pages. Roll No. ....

3102-II

B.A. (Part-III) Examination – 2024

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-III]

(Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न–पत्र

(भाषा, काव्यशास्त्र एवं निबन्ध)

8028077

Time: Three Hours **Maximum Marks: 100**

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

खण्ड–अ

1. हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। (10)

अथवा

हिन्दी की उपभाषाओं और बोलियों का परिचय देते हुए राजस्थानी भाषा पर प्रकाश डालिए।

2. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालते हुए इसके सुधार के लिए हुए प्रयासों का वर्णन कीजिए। (10)

अथवा

राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति एवं विकास यात्रा पर निबन्ध लिखिए।

खण्ड–ब

3. अलंकार को परिभाषित करते हुए यमक एवं श्लेष अलंकार में सोदाहरण अन्तर स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

काव्य में छंद की महत्ता स्पष्ट करते हुए रोला एवं मालिनी छंद के लक्षण एवं उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

4. रस के अवयवों का परिचय देते हुए प्रमुख रस सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए। (10)

अथवा

पर मैं तो यह मानता हूँ कि चंदन जो भी हो, किसी रंग में भी सना हो, वह हमारी विश्व भावना का ही एक शुष्क प्राय खंड है, जिसे रस–सिक्त करना हमारा सतत कर्त्तव्य है। जिस किसी भी शिला का हम होरसा बनवाएँ, वह धरती पर टिकी हो, संघर्षण में वह डगमगाने वाली न हो।

(घ) नए मानवीय मानों पर बल देने वाले अभिनव मलयानिलों से मैंने यह संकेत पाया है, कि मनुष्य महान है, वह दूसरे महत्तर के प्रति अर्पित क्यों हो। भुंजगों से लिपटा हुआ चंदन का वृक्ष ही स्वतः महान है, वह आसपास के कंकोल, निम्ब और कुटुज तक को चंदन बना डालता है। विषयों से परिवृत मानव अपने यश से अपने परिवेश में प्रत्येक युग में सुरभि भरता आया है, उसे अर्पित होने की क्या आवश्यकता? **(7½)**

अथवा

हे कोई ऐसा जीवंन दर्शन, ऐसा सिद्धाचार, ऐसी काया सिद्धि, जिससे बाहर–बाहर शरद–शिशिर, पतझर–हेमंत आए 'और जुझन–हार खाते चलें जाएँ परन्तु मानस की द्वार देहरी पर यह उत्तरा फाल्गुनी एक रस साठ वर्ष की आयु तक बनी रहें? है कोई ऐसा उपाय?

6. सरदार पूर्ण सिंह के निबन्ध 'आचरण की सभ्यता' की मूल–संवेदना को स्पष्ट कीजिए। **(15)**

अथवा

'भारतीय साहित्य की प्राणशक्ति' निबन्ध में व्यक्त विचारों एवं मान्यताओं पर प्रकाश डालिए।

7. डॉ. विद्यानिवास मिश्र कृत 'तुम चंदन हम पानी' निबन्ध की भाषागत विशेषताएँ बताइए। **(15)**

अथवा

'उत्तरा फाल्गुनी के आस पास' निबन्ध में व्यक्त सन्देश पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

काव्य में शब्द–शक्ति की महत्ता स्पष्ट करते हुए लक्षणा एवं व्यंजना शब्द शक्ति की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

खण्ड–स

5. निम्नलिखित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) प्रेम की भाषा शब्द रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द–रहित है। जीवन का तत्त्व भी शब्द से परे हैं। सच्चा आचरण–प्रभाव, शीत, अचल स्थित संयुक्त आचरण – न तो साहित्य के लम्बे व्याख्यानों से गढ़ा जा सकता है, न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से, न अंजील से, न कुरान से, न धर्म चर्चा से, न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में घुसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार की हथौड़े की मंद–मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है। (7½)

अथवा

जिनकी आत्मा समस्त भेदभाव भेदकर अत्यंत उत्कर्ष पर पहुँची हुई होती है वे सारे संसार की रक्षा चाहते हैं – जिस स्थिति में भूमण्डल के समस्त प्राणी, कीट–पतंग से लेकर मनुष्य तक सुखपूर्वक रह सकते हैं, उसके अभिलाषी होते हैं। ऐसे लोग विरोध से परे होते हैं। उनसे जो विरोध रखे वे सारे संसार के विरोधी है, वे लोक के कंटक हैं।

(ख) मनुष्य ने जो कर्म किया है, उसे संचित कर्म कहते हैं। जिस पुराने कर्म के फल को वह भोग रहा है, उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं। जो कुछ वह नए सिरे से करने जा रहा है, उसे क्रियमाण कर्म कहते हैं। ज्ञान होने पर संचित कर्म तो नष्ट हो जाते हैं, पर प्रारब्ध कर्म को भोगना ही पड़ता है। ज्ञान की अग्नि से संचित कर्म जलकर दग्ध बीज की तरह निष्फल हो जाते हैं और ज्ञानी प्रारब्ध कर्मों के संस्कार वश उसी प्रकार शरीर धारण किए रहता है, जैसे कुम्हार का चलाया हुआ चक्र दण्ड उठा लेने पर वेगवश कुछ देर चलता रहता है। (7½)

अथवा

काव्य का लक्ष्य मानव स्वभाव ओर मानवीय भावना के मार्मिक और स्थायी रूपों का चित्रण है। वाद का लक्ष्य है – तथ्य–विशेष की बौद्धिक व्याख्या करना। काव्य सूक्ष्म और असाधारण परिस्थितियों में मानव चरित्र और आचरण की भावमयी झांकी दिखाता है, वाद साधारण और असाधारण समस्त परिस्थिति का सामूहिक आधार लेकर चलता है और उसी पर अपना नियम–निरूपण करता है।

(ग) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के जमाने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया तब तुलसीदास की प्रगतिशीतला समझ में आएगी। (7½)